।। श्री शबरीधाम यात्रा माहात्म्य ।।

राजेश सुरेश दीक्षित

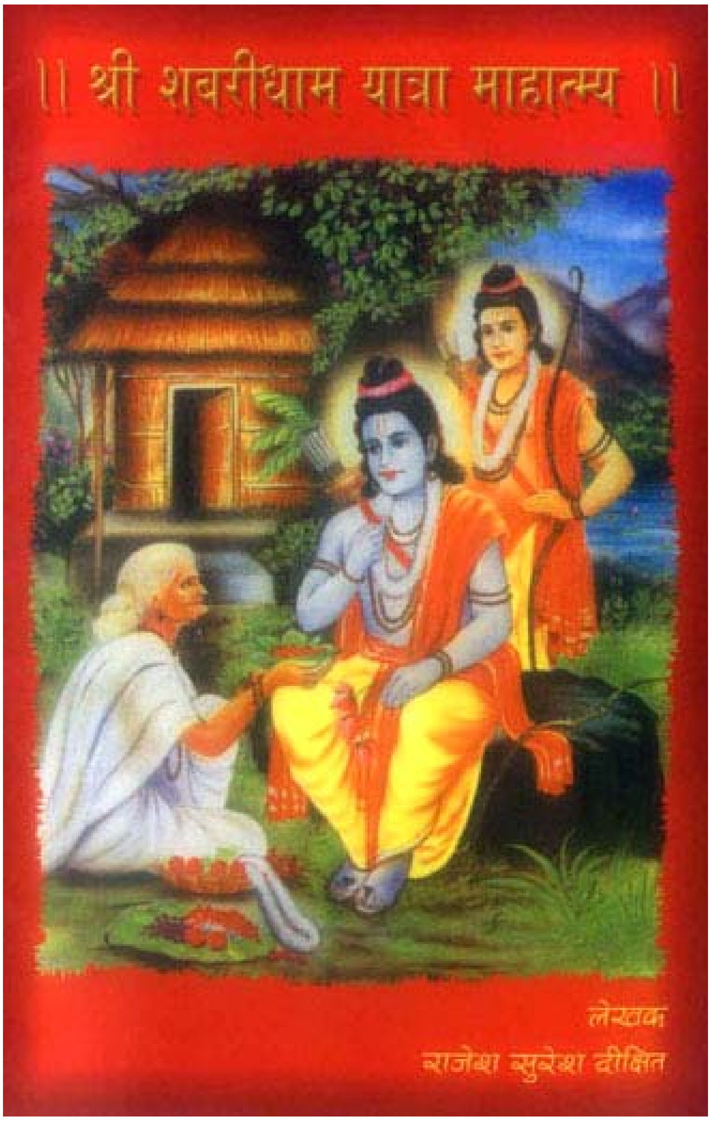

प्रस्तावना 3
माता शबरी एक श्रमणी 5
कबन्ध वध 8
श्रीराम शबरी मिलन 9
 एक वर्णन कई अर्थ 9
 अनूठा श्लेष 9
 एक विशेष क्रम 9
 अदम्य विश्वास 9
 चरण स्पर्श....एक भावपूर्ण दृष्य 10
 अति सुन्दर आसन 10
नवधा भक्ति 13
 श्री रामचरितमानस में नवधा भगति 15
एक लोककथा 16
पम्मा सरोवर के मंतगतीर्थ का माहात्म्य 17
तीर्थयात्रा एक सज्जन धर्म 17
शबरीकुम्भ 19
आरती 26
आभार 27

श्री शबरीधाम यात्रा माहात्म्य

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व में अपनी पवित्र भारतभूमि को कर्मभूमि एवं मोक्षभूमि कहा गया है। जगत के अन्य देश अपनी अपनी भूमि को भोगभूमि मानते हैं। भूमि के प्रति भारत एवं अन्य देशों की सोच में यही महत्वपूर्ण अन्तर है। यह भारतभूमि अनेक ऋषि मुनियों की तपस्थली है। अनेक महापुरूषों की जन्मभूमि है। यहाँ का बच्चा बच्चा राम है, यहां का कंकर कंकर शंकर है। यहाँ तो स्वयं परमेश्वर को जन्म लेने की इच्छा होती है।

गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंन्धु जैसी अनेक नदियों ने इस भूमि को सिंचित किया है। यहाँ का जन जन नदी को माता कहता है। इन्हीं नदियों के तट पर यहाँ की सभ्यता विकसित हुई है। प्रतिदिन स्नान करते समय पानी को तीर्थ मानकर हम नदियों का स्मरण करते हुए कहते हैं.

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू॥

कलियुग में श्रध्दावान लोग मन में ईश्वर प्राप्ति की इच्छा रखते हुए तीर्थयात्रा करते हैं। यह हमारी संस्कृति है। ज्ञान-विज्ञान-कला के माध्यम से साधना कर ईश्वर प्राप्ति करना भारत में अन्तिम उद्देश्य माना गया है। इसमें तीर्थयात्रा भी ईश्वर प्राप्ति का माध्यम माना है। सृष्टि के विविध रूपों का रसास्वादन कर केवल मनोरंजन प्राप्त करने तक तीर्थयात्रा सीमित नहीं है। ईश्वर के विविध रूपों के दर्शन का सात्विक प्रयास ही तीर्थयात्रा है।

तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यते।

मानव जीवन के आधारभूत जीवनमूल्ल्य मानो हमारे जलस्त्रोत हैं। ऐसे अनेक जलस्त्रोतों में स्वयं परमेश्वर ने स्नान किया है। अपने विविध तीर्थस्थलों की पवित्रता से सभी मनुष्यों की काया, वाचा, मनसा, शुध्दि होती हैं। सभी श्रध्दालु तीर्थस्थलों में पवित्र स्नान कर भगवान का पूजन करते है। अपने पुरखों की मुक्ति की कामना कर, ऐहिक सुख प्राप्ति एवं आमिक उन्नति के लिए तीर्थयात्रा करना हिन्दू धमृशास्त्रों का आदेश है।

जम्बूद्वीप के भरतखंड में दंडकारण्य क्षेत्र प्रभु श्री रामचंद्रजी के पदस्पर्शों से पुनीत हुआ है। चित्रकूट में पर्वत, नाशिक में पंचवटी इत्यादि भारत में सुप्रसिध्द हैं। उसी प्रकार ऋषि मतंग एवं उनकी रामभक्त शिष्या माता शबरी की तपोभूमि अर्थात गुजरात राज्य के डांग जिले का वनक्षेत्र भी बहुत प्रसिध्द है। पंचवटी से दक्षिण पश्चिम में स्थित यह वनप्रदेश पुरातनकालीन दंडकारण्य है। डांग के जिला मुख्यालय आहवा में दंडकेश्वर महादेव मन्दिर उसकी गवाही देता है। इस प्रदेश के आसपास में निवास करनेवाले हिन्दू कोली एवं अन्य वनवासी समाज के मन में रामायण रचयिता वाल्ल्मीकि के प्रति बड़ी श्रध्दा है। स्थानीय भील एवं वनवासी बन्धुओं में मतंग ऋषि एवं माता शबरी के प्रति अनन्य श्रध्दाभाव है।

आहवा से 34 कि.मी. दूर सुबीर गाँव के पास चमक डोंगर नामक एक पहाड़ी है। दंडकारण्य में भ्रमण करते समय यहाँ राम लक्ष्मण की माता शबरी से भेट हुई थी, उसी स्थान पर एक छोटे से मन्दिर का निर्माण हुआ है जो शबरीधाम नाम से जाना जाता है। आसपास के सारे हिन्दुओं का वह एक तीर्थक्षेत्र है। लाखों श्रध्दावान यहाँ समस समय पर दर्शन हेतु आते हैं। माघ पूर्णिमा के दिन

पुष्करिणी (पूर्णा) नदी के पम्पा सरोवर के पतंग तीर्थ में स्नान करने हेतु एकत्रित होने की परंपरा कई वर्षों से है।

डांग एवं आसपास के विस्तार में जनजागृति का कार्य करने वाले पूज्य स्वामी असीमानन्दजी की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए रामायण कथाकार पूज्य मोरारिबापू ने शबरीधाम में रामकथा पारायण किया। कथा के समय सहज भाव से उन्होंने कुम्भ का आव्हाहन किया। सभी ने उसका सहर्ष स्वागत किया। यह कुम्भ शबरीकुम्भ के नाम से प्रचलित होगा। स्वामी असीमानन्दजी के मार्गदर्शन में स्थानीय समिती ने एक भव्य मन्दिर का निर्माण किया। यह मानो इस तीर्थ का जीर्णोध्दार हुआ।

शबरीकुम्भ के पूर्व कुम्भ स्थल पर ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। करवीर पीठ के पूज्य शंकराचार्यजी के पवित्र करकमलों से ध्वजारोहण हुआ। इस अवसर पर एक धर्म परिषद का भी आयोजन हुआ।

गुरू जब तुला राशि में प्रवेश करता है, तब भाविक भक्तों के साथ संत महात्मा भी पवित्र स्नान करने हेतु इसी पम्पा सरोवर के मतंग तीर्थ में एकत्रित होते है। यहाँ पर मानो मेला लगता है, जो शबरीकुम्भ नाम से प्रचलित हुआ है। इस अवसर पर गुजरात शासन ने पम्मा सरोवर एवं शबरीधाम के आसपास के परिसर में उत्तम सुविधाएँ निर्माण की है। इन्हीं सुविधाओं के कारण लाखों की संख्या में भक्तगण इस शबरीकुम्भ के शुभ अवसर पर सहजरूप में एकत्र हो सकेंगे।

नगरों में, ग्रामों में निवास करने वाले सभी धर्मप्रेमी हिन्दुओं को इच प्राचीन तीर्थक्षेत की जानकारी प्राप्त हो, इस हेतु 'श्री शबरीधाम यात्रा माहात्म्य' नामक एक छोटी सी पुस्तिका का उपयोग करेंगे इसी आशा के साथ श्री राम चरणों में यह सेवा सादर समर्पित करता हूँ।

भवदीय
राजेश सुरेश दीक्षित

श्री शबरीधाम यात्रा माहात्म्य

माता शबरी एक श्रमणी

प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य के स्थान स्वरूप डांग का वनप्रदेश अर्थात् दण्डकारण्य। इस दण्डकारण्य में निवास कर रही शबरी, भगवान के आगमन की प्रतीक्षा में थी। शबरी का व्यक्तित्त्व अलौकिक था।

धैर्य एवं प्रतीक्षा का प्रतिरूप थी शबरी। मतंग ऋषि के वचन पर पूर्ण विश्वास और उसी के आधार पर धैर्य धारण करने वाली शबरी एक अनुकरणीय व्यक्तित्त्व है, हमारा आदर्श है। मतंग ऋषि ने अपनी जीवन लीला समाप्त करने से पहले शबरी को कहा कि एक दिन भगवान स्वयं तेरी कुटिया को पावन करेंगे। शबरी ने अपने गुरू को, 'राम कब आयेंगे?' ऐसा प्रश्न तक नहीं किया। गुरू पर इतना विश्वास कि कोई प्रश्न नहीं। ऐसा उदाहरण मिलना दुर्लभ है। सम्पूर्ण जीवन इसी विश्वास के आधार पर केवल प्रतीक्षा। प्रतीक्षा यह अध्यात्म जगत में एक गुण है। इसी लिए धैर्य एवं प्रतीक्षा का दूसरा नाम है शबरी।

ऋषी वाल्मीकि ने शबरी को श्रमणी कहा है। श्रमणी अर्थात् एक आध्यात्मिक चरित्र। शबरी भील परिवार में जन्मी एक भीलनी थी। उसका समर्प्णू जीवन भगवद् भक्ति में व्यतीत हुआ था। आध्यात्मिक साधना उसके जीवन का अभिन्न अंग था। अतः उसे श्रमणी कहा है। रामायण का यह एक महिमामण्डित चरित्र ह्।

इस ऐतिहासिक पात्र के संदर्भ में इतिहास विविध तथ्य प्रस्तुत करता है। एक ऐसा भी उल्लेख है कि शबरी के परिवार में जब उसके विवाह की तैयारियाँ चल रही थी तब परम्परागत रूप में चलने वाली कुछ विधियाँ उसको पसंद नहीं होंगी। कुछ रीति रिवाज उसे ठीक न लगे हों अथवा कुछ व्यवस्थायें उसे अनुकूल न लगी होंगी। मंगल प्रसंग पर अमंगल विध पसंद न होने के कारण उसने एक क्रान्तिकारी निर्णय कर गृहत्याग किया।

अमंगल विधि का अनादर करनेवाली इस भीलनी को ही आगे चलकर मंगलदर्शन अर्थात् प्रभुदर्शन हुए।

पुष्करिणी (पूर्णा) के तट पर वनश्री के एकांत में एक पर्वत पर छोटीसी कुटिया बनाकर शबरी रहती थी। जिस क्षेत्र में उसका निवास था, उसी क्षेत्र के तीर्थ में स्नान, पूजा हेतु आनेवाले ऋषियों की वह सेवा करती थी। पम्पा सरोवर की दिशा में जा रहे पथ के कंकर-पत्थर को दूर कर उसे साफ करती थी। यह सारा कार्य वह छुपकर चुपचाप करती थी क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि कोई उसे देख ले और उसका अस्वीकार हो। प्रातःकाल में झाड़ू लगाकर कंटकों को दूर कते समय आवाज हो और कोई देख ले, इस भय से वह कंटाकें को हाथ से एकत्र करती थी। प्रतिदिन इस क्षेत्र को कौन स्वच्छ करता है? ऐसा प्रश्न कई संत-महात्मा एक दूसरे से पूछते रहते थे। एक दिन मतंग ऋषि से शबरी की भेट हुई। वे उसे अपने आश्रम ले गए, जहाँ उसे आश्रय प्राप्त हुआ।

आश्रम में शबरी की साधना शुरू हुई। वहाँ के छोटे-बड़े कामों के साथ-साथ वह सारा दिन गायों की सेवा में व्यस्त रहती। अपने विवेकपूर्ण व्यवहार और नम्रता के कारण धीरे-धीरे वह सभी आश्रमवासियों एवं अतिथियों की प्रिय हो गई थी। वह अत्यंत मृदुभाषिणी थी, एक प्रकार से स्मितपूर्वक बात करना ही उसका परिचय बन गया था।

प्रतिदिन विविध कामों में व्यस्त रहते हुए भी, गुरू के प्रवचन को ध्यान से सुनना, आवश्यकता रही तो नम्रतापूर्वक प्रश्न पूछ कर समाधान प्राप्त करना, उसका स्वभाव बन गया था। अभ्यास के कारण कठिन विषयों में भी उसने प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। प्रतिदिन उसकी ब्रह्मजिज्ञासा बढ़ती गई।

मतंग ऋषि ने भीलनी शबरी के भीतर छिपी ज्ञान-पिपासा को परख कर, उसे प्रमाणित कर अन्य सभी शिष्यों के साथ साथ उसे भी श्रान दीक्षा और भक्ति दीक्षा प्रदान की। मतंग ऋषि ने एक स्त्री को दीक्षित किया, एक भीलनी को दीक्षित किया, यह वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में अपने आप में एक विशेष घटना है। मतंग ऋषि के पुण्य स्मरण के साथ ही हमारे भारतीय ऋषि परंपरा को हम आदरयुक्त प्रणाम करते हैं।

इस तरह यह सम्बन्ध गुरू-शिष्या के रूप में परिवर्तित हो गया। गुरू के प्रत्येक शब्द का वह आदर करती थी। गुरू के बताए हुए सभी कामों को वह बड़ी नत्मयतापूर्वक करती थी। विविधरूप में वृध्द गुरू की सेवा करती थी।

गुरू सेवा के कारण शबरी को आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मतंग ऋषि कहते है, "मैंने तो प्रभुदर्शन नहीं पाये, परन्तु स्वयं परमात्मा तेरी कुटिया को पावन करेंगे"।

रामायण को हजारों वर्ष हो चुके, फिर भी शबरी पुरातन नहीं लगती। वह सनातन है। पुरातन होती तो वह इतिहास का एक खण्डहर बन जाती और हम भी कब के उसे भूल चुके होते। इतने वर्षो के पश्चात भी करोंडों लोग उसका स्मरण करते हैं। अतः शबरी सनातन है। भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को शबरी हमारी है ऐसा लगता है। गुजरात, कर्णाटक, केरल, तमिलनाडु सभी के मन में शबरी हमारी है ऐसा भाव है।

वन को संस्कृत में 'जनस्थान' भी कहा है। ऐसे जनस्थान में निवास करती जाति अर्थात जनजाति। शबरी एक भील जनजाति की भीलनी थी। शबरी कहाँ की है? कोईइसका आधार ढूँढने का परिश्रम भले करे हम स्थानीय समाज की मान्यता को महत्त्वपूर्ण मानकर ही चलें। उसका चरित्र हमारा आदर्श है। मतंग ऋषि शबरी के गुरू थे। गुणसम्पन्न शबरी का जीवन देखकर हमें उसका ही शिष्यत्व स्वीकार करने की इच्छा होती है। अतः शबरी हमारी गुरू है। शबरी के जीवन का स्मरण कर, अपने जीवन में कुछ गुणों को यदि हम अपनाते हैं तो यह एक गुरू सेवा ही होगी।

गुरू अपने शिष्य के जीवन को प्रभावित ही नहीं, अपितु प्रकाशित भी करता है। शबरी हमारे जीवन को प्रकाशित करती है। इस चरित्र के माध्यम से हमें बपना धर्म समझना है।

भगवान राम ने शबरी को आशीर्वाद दिया था कि तेरी महिमा जिसके मन में निवास करेगी, वह भाग्यशाली होगा। हम सभी भाग्यशाली है क्योंकि हमारे मन में शबरी की महिमा निवास करती है।

अपना समाज सरल सहज स्वभाव का है। हम शबरी के चरित्र की ओर देखते है तो मन में कई प्रकार के विचार आते हैं। अपने घर से चल पड़ी इस भीलनी का वन में निवास कहाँ होगा? वह अकेली कैसे रहती होगी? किस प्रकार का आहार करती होगी? प्रेमवश इस प्रकार के विचार आना स्वाभाविक है।

शबरी एक आध्यात्मिक महिला थी। वाल्मीकि उसे सिध्द तपस्विनी कहते हैं। एक स्नयासिनी सा उसका जीवन था। अध्यात्म जगत में जैसा व्यक्ति का जीवन होता है, वैसा उसका जीवन था। हम अपने सामान्य स्तर से उपर उठकर सोचना शुरू करें तो इस चरित्र के प्रति न्याय होगा।

शबरी का एका आहार था .... आकाश। वह खुले आकाश के नीचे रहती थी, भ्रमण करती थी, विश्राम करती थी और आकाश का सेवन करती थी। दुसरा आहार था.... वायु। श्वाँस हम सबका जीवन है। वायु तत्त्व का सब सेवन करते हैं, वैसे ही शबरी भी वायु का सेवन करती थी। तीसरा आहार था.... अग्नि। अग्नि अर्थात् सूर्य। प्रतिदिन सूर्य किरणों से वह ऊर्जा प्राप्त करती थी। चौथा आहार था ... जल और पाँचवा था ... अन्न। अन्न अर्थात् फलाहार। अन्न अर्थात् पृथ्वी तत्त्व।

आध्यात्मिक सृष्टि में शबरी का स्थान अलौकिक है। स्वयं भगवान राम उससे मार्गदर्शन माँगते हैं। ऋषिमुनि अपने किये हुए कर्मों के लिये उससे क्षमायाचना करते हैं। एक बार वन में ऋषियों की गलत धारणा के कारण एक सरोवर रक्तरंजित हो गया था। शबरी के पद्स्पर्शो से वह पुनः विशुध्द हुआ। तब सभी ऋषिमुनियों ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए शबरी से क्षमा माँगी। शबरी की आध्यात्मिकता का परिचय कराने वाले ऐसे अन्य उदाहरण भी हैं।

भगवान राम जब दण्डकारण्य में विचरण कर रहे थे, तो उन्होंने एक आश्रम देखा। जिसे भगवान ने आश्रम माना वह शबरी की कुटिया थी। कोई भी कुटिया तभी आश्रम सी लगती है, जब उस सारे क्षेत्र में आध्यात्मिकता का वातावरण होता है। अपने आध्यात्मिक जीवन प्रभाव के कारण शबरी की कुटिया भी आश्रम बन गई थी।

अपने यहां ब्राह्मण को द्विज कहा है। उसके दो जन्म होते हैं। एक माता पिता द्वारा और दूसरा विद्याभ्यास प्रारंभ करने से पूर्व उपनयन संस्कार द्वारा। शबरी द्विज नहीं, त्रिज थी। उसके तीन जन्म हुए थे। एक माता पिता द्वारा देह प्रात हुई तब, दूसरा गुरू ने दीक्षित किया तब, और तीसरा जन्म स्वयं भगवान जब उसकी कुटिया में आये।

शबरीका जन्म शरदपूर्णिमा (अश्विन पूर्णिमा) के दिन हुआ था। देव दीपावली (कार्तिक पूर्णिमा) के दिन, उससे मतंग ऋषि मिले थे। वसंत पंचमी (माघ पंचमी) के दिन भगवान राम स्वयं शबरी के घर पधारे थे। ये तीन महत्त्वपूर्ण दिन अर्थात् तीन जन्म। इसी लिये कहते हैं कि शबरी त्रिज थी।

इतने महान चरित्र के जीवन में आडम्बर को तनिक भी स्थान हीं था। उसका जीवन एक सहज सरल जीवन था। निरन्तर भगवान का नामस्मरण अर्थात् दिन भर कार्य करते करते 'राम राम' मंत्र का जाप चलता था। इस मंत्र के जाप के लिये उसके पास न तो माला थी, न कोई विशेष आसन या न कोई विशेष स्थान था। कार्य करते करते केवल प्रभु सुमिरन।

इतना उच्च जीवन होते हुए भी शबरी को नम्रता अपना ध्यान आकर्षित करती है। शबरी अपने आपको अधम कहती है। मन में प्रश्न उठता है कि, यह भीलनी क्या सचमुच तुच्छ थी?, दीन थी? इतना पवित्र जीवनयापन करने वाली शबरी तुच्छ, अधम हो ही नहीं सकती। यह तो उसके मनकी ऊंचाई है, उसकी अलौकिकता है। शबरी एक विकसित व्यक्तित्व है। ऐसे रामप्रिय व्यक्तित्व को शत शत प्रणाम।

वर्तमान समय में गुजरात का डांग वनप्रदेश अर्थात् संभवतः रामायण कालीन दण्डकारण्य, आज भी इस तपस्विनी का स्मरण कर रहा है। स्थानीय हिन्दू समाज के मन में श्रध्दाभाव है कि शबरी हमारी थी। इसी प्रदेश में उसने विचरण किया है। उसकी आध्यात्मिक शक्ति के कारण यह प्रदेश विशेषतः सुबीर गाँव, पर्वत एवं पूर्णा नदी के आसपास का प्रदेश प्रकाशमान हुआ था। आज भी यहां एक पर्वत को लोग 'चमक डोंगर' कहते है। वहां दो पवित्र शिलाएँ हैं सभी की मान्यता है कि भगवान श्रीराम लक्ष्मण इसी शिला पर बैठे थो। शबरी माता ने उन्हें यहीं पर बेर खिलाये थे।

इस पवित्र स्थान पर सन 2002 में प्रसिध्द रामकथाकार पूज्य मोरारिबापू ने रामकथा पारायण किया था। सारी कथा मानस शबरी के रूप में कही गई थी। कथा कहते समय उन्होंने कहा कि यह शबरी का स्ािन शबरीधाम है। एक पवित्र तीर्थ है। भारत में सभी तीर्थो का दर्शन करने के पश्चा इस तीर्थ में दर्शन करने से यात्रा को पूर्णता प्राप्त होगी।

कबन्ध वध

पितृआज्ञा का पालन करते प्रभु श्रीराम लक्ष्मण एवं सीताजी वनवासी बने। वनवास में कुछ समय के लिए उन्होंने पंचवटी में निवास किया। साधु वेश में आए कपटी रावण ने माता सीता का हरण किया। राम लक्ष्मण इससे अत्यन्त व्यथित हुए। सीता की खोज में चले ये बन्धु द्वय जब दण्डकारण्य में भ्रमण कर रहे थे तब पक्षीराज जटायु से उनकी भेंट हुई। जटायु ने सीता का हरण कर आकाश मार्ग से जानेवाले रावण से संघर्ष किया था। दोनो में हुए युध्द के समय जटायु घायल होकर गिर पड़े। मरणोन्मुख अवस्था में घायल जटायु की श्रीराम लक्ष्मण से भेंट हुई। उन्होंने प्रभु राम को सारा वृत्तांत बताया और अन्तिम श्वाँस ली। भगवान ने उन्हें अग्निदाह दिया।

जटायू से प्राप्त जानकारी के आधार पर श्रीराम प18चिम दिशा की ओर चल पडे। मार्ग में "क्रौञ्चारण्य" नामक वनप्रदेश से जात समय एक विशेष अनुभव हुआ। जहाँ रात दिन केवल अंधकार ही रहता था ऐसे घने जंगल में एक बहुत बडी खाई दियाई दी। अयोमुखी नामक एक राक्षसी उस खाई से बाहर आई और उसने लक्ष्मणजी को पकड लिया। दोनों में संघर्ष हुआ। लक्ष्मणजी ने उसकी नाक काट कर उसे परास्त किया।

उसके पश्चात उन्हें मार्ग में एक राक्षस मिला। जिसका रूप विचित्र था। उसे न तो मस्तक था न तो कण्ठ, उसकी भुजायें बहुत लम्बी थीं। कबन्ध नामक इस राक्षस के साथ युध्द हुआ। उसने अपनी प्रचंड लम्बी भुजाओं से राम लक्ष्मण को पकडकर अपना सामर्थ्य दियाने का प्रयास किया, परंतु वह असफल रहा। राम लक्ष्मण ने उसकी भुजा काटकर उसे परास्त किया।

कबन्ध राक्षस को पूर्वजन्म में मिले एक शाप के कारण एसा विचित्र रूप मिला था। घायल कबन्ध ने श्रीराम को सारा वृत्तांत बताया। उसने कहा "मैं दनु का पुत्र हूं, मेरा पूर्व रूप तीनों लोक में प्रसिध्द था। मैंर राक्षसी कृत्य कर ऋषि मुनियों को त्रस्त करता था। स्थूलशिरा नामक एक ऋषि के शाप के कारण मुझे ऐसा विचित्र रूप मिला है। आपने मुझे उससे मुक्ति दी है।"

श्रीराम के कहते पर लक्ष्मणजी ने कबन्ध का अग्नि संस्कार किया। उस अग्निशिखा से एक मालाधारी दिव्य पुरूष प्रगट हुआ। 'मैं सीताजी की खोज में आपकी सहायता करना चाहता हूं।" कबन्ध ने श्रीराम से वार्तालाप प्रारंभ किया। "सामाश्रय" युक्तिवाद से हम सीताजी को प्राप्त कर सकते हैं। इन्द्रपुत्र वाली ने अपने भ्राता सुग्रीव को राज्य से बाहर निकाल दिया है। सम्प्रति पम्पा पुष्करिणी नदी के पास ऋष्यमूक पर्वत पर उसका निवास ह्। मतंग ऋषि के प्रीाव के कारण वाली इस वन प्रदेश में प्रवेश करने में असमर्थ है। हमें सुग्रीव से भेंट करनी चाहिए। वे सीताजी की खोज में हमारी सहायता कर सकते हैं। ऐसा कहकर कबन्ध ने श्रीराम को सुग्रीव से मिलने का मार्ग दिखाया। उसी दिशा में तपस्विनी शबरीमाता सें भी भेंट करने का आग्रह किया। इस कथन के पश्चातत वह दिव्य पुरूष अपने विमान से आकाश मार्ग से चल पड़ा।

(संदर्भ : वाल्मीकि रामायण अरण्यकांड सर्ग 70 ते 76)

श्रीराम शबरी मिलन

कबन्ध से जानकारी प्राप्त कर राम लक्ष्मण सुग्रीव से मिलने चले। चलते चलते वे पुष्करिणी (पूर्णा) नदी के प18चिम तट पर पहूँचे। हरीतिमा से ढकी यह भूमि अनेक छोटे बड़े पहाड़ एवं घने वनप्रदेश को पार करने के प_चात, वृक्षों से आच्छादित एक आश्रम दियाई दिया। वन विचरण करते समय आश्रम दिखने पर भगवान स्वयं उस दिशा में चल पड़े। आश्रम के निकट पहुंचते ही श्रीराम ने श्यामवर्णी शबरी को देखा और शबरी ने श्रीराम के दर्शन कियो। उसी श्रीराम शबरी मिलन प्रसंग का वर्णन गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने रामचरितमानस में वर्णित किया है।

एक वर्णन कई अर्थ

ताहि देइ गति राम उदारा। शबरी के आश्रम पगु धारा॥

शबरी देखी राम गृह आये। मुनि के वचन समुझि जिय भाये॥

गोस्वामी तुलसीदासजी के इस वर्णन में कई अर्थ वर्णित है। प्रभु श्रीराम आश्रम देखकर आये और शबरी को देखते ही उन्हें लगा, मानों वे अपने घर आ पहुँचे हैं।

शबरी माता के आध्यात्मिक पवित्र जीवन के कारण उनकी कुटिया ने आश्रम का स्थान ले लिया था। वैसे भगवान राम को आश्रम में शबरी माता से मिलते ही स्नेह का अनुभव हुआ। अपनी माँ कौशल्या का स्मरण होते की अपने घर आने जैसा अनुभव हुआ।

अनूठा श्लेष

यहाँ श्रीराम ने शबरी को देखा, या शबरी ने श्रीराम के दर्शन किया..... सही में क्या हुआ? इस वर्णन में अनूठा श्लेष है। जब हम कहते हैं कि श्रीराम ने माता शबरी को देखा, तो उन्हें अपने घर लौट आने का अनुभव हुआ, आनन्द हुआ। वैसे जब हम कहते हैं कि माता शबरी ने श्रीराम के दर्शन किये तो शबरी को अपने गुरू के वचन सार्थक होने का आनन्द हुआ।

एक विशेष क्रम

इस मिलन में तीन व्यक्ति हैं। तीनों की अपनी अपनी भूमिका है। श्रीराम स्वयं परमात्मा, लक्ष्मणजी अर्थात् आचार्य और शबरी माता साधक के रूप में है, श्रमणी है, आराधक है। सर्व साधारण रूप में साधक को आचार्य परमात्मा के पास ले चलते हैं परन्तु यहाँ पर परमात्मा, आचार्य को साधक के घर आये हैं। इससे साधक अर्थात् शबरी की आध्यात्मिक ऊँचाई का सहज ही अनुभव किया जा सकता है।

अदम्य विश्वास

शबरी को श्रीराम के आगमन का अनन्द तो हुआ, परन्तु उससे भी अधिक आनन्द अपने गुरू के वचन की सफलता पर हुआ।

सफलम् गुरू भाषितम्।

शबरी श्रीराम आगमन की प्रतीक्षा में थी। प्रतीक्षा का एक अनोखा उदाहरण उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से प्रस्तुत किया। गुरूवचन पर अदम्य विश्वास था। जब श्रीराम अर्थात् परमात्मा

स्वयं उसकी कुटिया में आये तो लगा जैसे उसके घर मानों स्वर्णीम सूर्योदय हुआ। शबरी का जीवन धन्य हो गया।

चरण स्पर्श....एक भावपूर्ण दृष्य

भगवान श्रीराम लक्ष्मणजी के आगमन पर शबरी माता ने उनके चरण स्पर्श किया। तुलसीदासजी के रामचरितमानस में वर्णन है कि......

स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई
सबरी परी चरण लपटाई।

कोई भी व्यक्ति जब चरण स्पर्श करता है, परमगति प्राप्त करने को अर्थात् वह सम्पूर्ण समर्पण करने को तैयार है ऐसा ही मानना चाहिऐ। यहाँ शबरी चरण स्पर्श करती है, तब एक भावपूर्ण दृष्य अवतरित होता है। यहाँ पर वाणी द्वारा कोई याचना नहीं, कोई अपेक्षा नहीं केवल सम्पूर्ण मौन है। प्रेम की अभिव्यक्ति में वाणी से अधिक दृष्टि और दृष्टि से अधिक हृदय का स्थान है। कुछ कहते की आवश्यकता नहीं, कुछ बोलने की आवश्यकता नहीं, केवल स्नेह का मिलन है।

प्रभु श्रीराम के चरण का प्रक्षालन शबरी, जल से करती है।.. सादर जल ले चरण पखारे....। इसकेभी कई अर्थ है।

मन में जो आदर है उसकी अभिव्यक्ती के रूप में नेत्र से जो प्रेमाश्रु चरण पर पड़े उससे शबरी प्रभु के चरण प्रक्षालन करती हृ।

शबरी प्रभु के दोनों चरणों का प्रक्षालन करती है। यहाँ पर चरण प्रक्षालन करते समय ब्रह्म का रूप है श्रीराम और अपने गुरू मतंग ऋषि, दोनों में जो अद्वैत है उसका दर्शन कर शबरी दोनों चरणों का प्रक्षालन करती है।

राम लक्ष्मण साथ हैं अर्थात् परामात्मा और आचार्य दोनों साथ है और शबरी दोनों के चरण प्रक्षालन करती है।

शबरी को सीताजी के दर्शन की भी इच्छा है। परन्तु वे तो अपहृत है, ऐसे समय श्रीराम के दोनों चरणों का प्रक्षालन कर शबरी, राम सीता के सह अस्तित्त्व का सूक्ष्म रूप में स्वीकार कर अपनी आध्यात्मिक ऊँचाई का परिचय देती है।

अति सुन्दर आसन

प्रेमाश्रु से चरण प्रक्षालन के पश्चात शबरी माता ने श्रीराम लक्ष्मण को बैठने के लिए आसन दिया। श्रीरामचरितमानस में शबरी के घर आये दो भाई, अर्थात् श्रीराम लक्ष्मण का...... 'सुन्दर दोउ भाई....' ऐसा वर्णन है। एक श्याम है (राम), दूसरा गौर वर्ण का है (लक्ष्मण) दोनों सुन्दर हैं। परन्तु शबरी माता ऐसे सुन्दर भाईयों को जो आसन देती है वह अति सुन्दर है। इसमें आसन एवं अति सुन्दर दोनों शब्द विशेष अर्थ में हैं।

आसन का स्थलू अर्थ बैठने का स्थान। परन्तु यहाँ एक विशेष अर्थ भी है.... आस... न अर्थात् जिसमें कोई आस नहीं ऐसा स्थान। इससे शबरी के मनकी विशालता प्रगट होती है। जहाँ पर कोई आस नही, अपेक्षा नहीं ऐसे स्थान को ही अति सुन्दर कह सकते हैं।

शबरी का निवास कुटिया है, राजप्रसाद नहीं। वहाँ सिंहासन नहीं है, आसन के रूप में एक पत्थर है। फिर भी उसे अति सुन्दर कहा है क्योंकि बड़े प्रेम से आसन ग्रहण करने को कहा है।

सम्पूर्ण जीवन श्रीराम के आगमन की प्रतीक्षा में व्यतीत हुआ भगवान स्वयं जब आये तो शबरी ने मानों अपने हृदय सिंहासन पर उन्हें स्वान दिया है। अतः वह अति सुन्दर आसन है।

आसन प्रदान करनेवाली शबरी का जो अन्तःकरण है, वह सर्वथा एषणा मुक्त है। अतः यह सर्वश्रेष्ठ आसन है।

श्रीराम के आगमन पर शबरी ने आसन ग्रहण करने को कहा, वहाँ शबरी 'माता' के स्थान पर है अर्थात् माता द्वारा अपने पुत्र को दिया हुआ आसन है, अतः वह अति सुन्दर हृ।

श्रीराम लक्ष्मण दोनों भाई सुन्दर है और उन्हें दिया गया आसन अति सुन्दर है। ऐसे अति सुन्दर आसन पर बिराजमान हुए दोनों सुन्दर भाइयों का शबरी स्वागत करती है। श्रीराम के रूप में स्वयं परमात्मा माता शबरी द्वारा दिये हुए बेरों का सेवन करते हैं ..... फलाहार करते हैं।

वनवास में विचरण करते समय कई जगह पर श्रीराम भगवान फलाहार करते हैं, परन्तु यहाँ पर एक विशेषता है। यहाँ माता खिला रही है। मीठे-मीठे बेर स्वयं चखकर बड़े प्रेम से खिला रही है।

रामचरितमानस में इस प्रसंग का बड़ा भावपूर्ण वर्णन है। कुछ चिकित्सक मनोवृत्ति के विद्वान लोग विभिन्न प्रश्न उपस्थित कर अपनी शंका प्रगट करते हैं।

क्या राम को सही अर्थ में बेर खिलाये थे?

क्या जूठे बेर स्वयं परमात्मा ने खाये होंगे?....... इत्यादि

जैसी जानकारी उपलब्ध है, उसी के आधार पर यहाँ विचार प्रगट करने का प्रयास है। सम्भवतः किसी के मन का समाधान हो।

वाल्मीकी रामायण में फलाहार का ही उल्लेख है और तुलसी के रामचरितमानस में भी श्रीराम ने फलाहार किया ऐसा वर्णन है। प्रभु ने प्रेमभाव से दिये रसपूर्ण कंद, मूल, फलों को बारंबार उसकी प्रशंसा करके खाया।

कंद, मूल, फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बरवानी॥

ऐसे फलाहारका वर्णन होते हुए भी श्रीराम ने शबरी के जूठे बेर खाये ऐसा ही वर्णन प्रचलित है। क्या कारण हो सकता है? कौनसा तर्क है? तुलसी कृत रामचरितमानस, वाल्मीकि रामायण जैसे ग्रंथो को शास्त्र कहें, तो शास्त्र में जो उल्लेख है, उससे हटकर मान्यता कैसे प्रचलित हुई होगी?

शास्त्रीय प्रमाण का आदर करते हुए, इस भावपूर्ण प्रसंग का अंतःकरण से, हृदय से सम्बन्ध होने के कारण, सारे प्रसंग में भावविश्व के वर्णन का भी स्थान है। ऐसे समय मीठे बेर या जूठे बेर ऐसे वर्णन के भी कई तर्क है।

श्रीराम के आगमन की वर्षे तक शबरी ने प्रतीक्षा की थी। प्रतिदिन 'मेरे राम आज अवश्य आयेंगे' ऐसा मानकर शबरी तैयारियाँ करती थी। उसकी यह साधना वर्षो तक चली। वर्षो तक की प्रतीक्षा को देखते हुए ऐसा विचार भी प्रचलित है कि जिन वृक्षों के बेर मीठे हो उन वृक्षों के बीजों को उसने अपनी कुटिया के आसपास बोया हो। उनका सिंचन किया हो। जब श्रीराम पधारे तब उन्हीं वृक्षों के बेर दिय हों ऐसा भी सम्भव है इसलिये बेर का मीठा होना सम्भव है।

यहाँ शबरी 'माता' के स्थान पर है। माता द्वारा अपने पुत्र को अच्छे से अच्छा आहार कराने का विचार करें तो चखकर बेर देना सम्भव है। अतः बेर मीठे और जूठे दानों थे।

वन में विचरण करते समय, तिस वृक्ष के बेर मीठे हों वही बेर शबरी ने श्रीराम के सन्मुख रखे होंगे किन्तु वृक्ष से बेर तोड़ने के पश्चात उसे चखकर लाते समय हस्तप्रक्षालन करना सम्भव नही

हुआ होगा, अतः वे जूठे बेर थे ऐसा कह सकते हैं।

तुलसी के रामचरितमानस में अथवा वाल्ल्मीकि रामायण में मीठे बेर जूठे थे ऐसा वर्णन नहीं है परन्तु पद्मपुराण में जूठे बेर खिलाये ऐसा वर्णन है।

भगवान श्रीराम जब अयोध्या में थे, तो माता कौशल्ल्या का प्रेम पाया। विद्याभ्यास करने जब आश्रम गये तो माता अरूंधती का प्रेम पाया। वन विचरण करते समय वे जब शबरी के द्वार पर आये तो, शबरी को 'माता' स्वरूप पाया। शबरी-श्रीराम का माता-पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है। वैसे शबरी-श्रीराम सम्बन्ध भक्त-भगवान का सम्बन्ध भी है। ऐसे प्रेम सम्बन्ध के लिए कहा जाता है कि... 'प्रेम दोनों ओर पलता है।'

भक्त भगवान की जूठन को प्रसाद के रूप में ग्रहण कर सकता है तो कभी कभी प्रेमवश भगवान भी भक्त की जूठन को क्यों न ग्रहण करें? यह तो प्रेम की महिमा है। पदार्थ महत्व का नहीं, महत्व प्रेम का है। अतः मीठे बेर जूठे थे और श्रीराम ने बारंबार खाये ऐसा वर्णन कथा कहते समय किसी कथाकार ने किया हो तो वह कदापि अनुचित नहीं हो सकता।

शबरी ने जूठे नहीं अनूठे बेर खिलाये थे। प्रसंग का भावपूर्ण कथन अथवा लेखन कोई अपराध नहीं है।

आध्यात्मिक विश्व में श्रीराम-शबरी मिलन का वर्णन

शबरी के द्वार पर श्रीराम आगमन...... चरण स्पर्श... बैठने के लिये आसन देना...... फलाहार में (मीठे) जूठे बेर देना...... इत्यादि

आध्यात्मिक विश्व में विचरण करने वाले योगी पुरूष भी अपने अपने स्तर पर इस सारे प्रसंग का वर्णन करते समय कहते हैं कि.... शबरी ने चरण पखारे तो प्रेमाश्रु से..... आसन ग्रहण करने को कहा वह एषणामुक्त आसन..... स्वागत में फलाहार अर्थात् कर्मफलों के फलाहार से स्वागत ऐसा वर्णन है। ये कर्म फल कौनसे? कर्म अर्थात् मनुष्य जीवन व्यवस्था के चार आश्रम (ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम) के फल अर्पण किये।

भगवान ब्राह्मण के मुख से आहार ग्रहण करते हैं अर्थात् द्विजमुख से आहार का ग्रहण करते हैं ऐसी एक मान्यता है। वन में इस भीलनी के पास ब्राह्मण कौन है? शबरी ने जो बेर खिलाये उन्हें दाँनों का स्पर्श हुआ अर्थात् द्विजमुख से बेर खिलाये। (संस्कृत में जिसका दो बार जन्म होता है ऐसे दाँतों को द्विज कहा है) ऐसा वर्णन जानकर बेर जुठे थे ऐसा कहना सहज है।

सभी अर्थ अपने अपने स्थान पर सही हैं। सुज्ञ व्यक्ति को योग्य अर्थघटन करना चाहिऐ। प्रत्येक प्रसंग के अनुरूप उसका अर्थ करने में ही समझदारी है।

फलाहार से भगवान के स्वागत के प_चात शबरी उठकर भगवान को कहती है कि, हे प्रभु! मैं आपकी स्तुति किन शब्दाकें में करूँ? मैंने विद्याभ्यास नहीं किया है, मुझे स्तुति करना नहीं आता। फिर भी भगवान बड़े प्रसन्न थे। उन्होंने शबरी के हृदय के भाव सुने और आशीष दिया, "जिनके हृदय में तेरी महिमा निवास करेगी वह भाग्य शाली होगा।"

वैसे भी शबरी को भगवान की स्तुति करने की क्या आवश्यकता थी? भगवान की स्तुति कौशल्ल्या करें, अहल्ल्या करें, ब्रह्मा करें... जो विद्वान हैं, विदुषी हैं वे स्तुति करें। राक्षस कुल में जन्म लिए रावण ने भी भगवान शंकर की स्तुति की है, क्योंकि वह विद्वान था। शबरी अपने आपको एक सामान्य महिला मानती है। वह राम को कहती है कि मैं कैसे स्तुति करूँ? स्तुति करना नहीं आता इससे कोई भक्त छोटा नहीं हो जाता। जो स्तुति नहीं करते उनको निम्न स्तर का मानना ठीक नहीं

है। वैसे तो 'राम' शब्द स्वयं एक महान स्तुति है। शबरी राम नाम का रटन दिन रात करती थी अर्थात् स्तुति करती थी परन्तु उसकी स्तुति स्त्रोत्र पठन के रूप में नहीं थी।

हाथ जोड़कर भगवान के सामने खड़ी होकर शबरी ने प्रश्न किया, "मैं स्तुति कैसे करूँ"? भगवान ने उसके हृदय के भाव सुने और प्रस्न्न हुए। भगवान ने शबरी को आशीष प्रदान किया। उसके पश्चात उन दोनों के बीच संवाद हुआ।

रामायणकार वाल्मीकि ने कहा है ....

कच्चिते निर्जिता विघ्नाः कच्चिते तपः।
कच्चिते नियतः कोप आहारश्च तपोधने॥ (74/8)

श्रीराम शबरी से कुछ प्रश्न पूछते हैं। हे शबरी आपने तपः साधना में आनेवाले विघ्नों पर विजय प्राप्त की है? क्या आपकी तपस्या में नित्य वृध्दि होती है? क्या आपने क्रोध एवं आहार पर नियंत्रण प्राप्त किया है?

कच्चिते नियमाः प्राप्ताः कच्चिते मनसः सुखम्।
कच्चिते गुरूसुश्रूषा सफला चारूभाषिणि॥

हे चारूभाषिणी! क्या आपने साधना करते समय जिन नियमों को स्वीकार किया है, उनका पालन होता है? आपको साधना से सुखानुभव होता है? आपने गुरूजनों की जो सेवा की है उसका फल मिला है?

श्रीराम द्वारा शबरी से पूछे गये प्रश्नों का स्तर देखते हुए उसकी आध्यात्मिक ऊँचाई का अनुमान किया जा सकता है। किसीने कहा है उन दोनों का मानो संवाद नही सत्संग चल रहा था। इन प्रश्नों के पश्चात् शबरी कुछ समय के लिये मौन हो गई। शबरी ने केवल इतना ही कहा कि हे रघुनंदन! आपके दर्शन मात्र से मेरा जीवन धन्य हो गया। मेरे गुरू के वचन सफल हुए।

इसी संवाद में श्रीराम ने शबरी को नौ प्रकार की भक्ति की जानकारी दी। भगवान जानकी की खोज में निकले हैं यह बात तो वे भूल ही गये। अन्त में उन्होंने शबरी के पास से मार्गदर्शन माँगा।

इस संवाद में एक से अधिक बार भगवान शबरी को भामिनी कहते है। भामिनी का अर्थ होता है 'सुन्दर स्त्री'। सुन्दरता केवल शरीर के बाह्य सौन्दर्य के संदर्भ में नहीं अपितु मन की सुन्दरता के कारण शबरी को भामिनी कहा है। मानसिक सौन्दर्य, वाचिक सौन्दर्य एवं शबरी के कर्मरूपी जीवन के कारण भी वह सुन्दर थी। अदम्य साहस, अडिग श्रध्दा, अनन्य समर्पण इत्यादि जैसे गुणों की धनी शबरी को भगवान भामिनी कहते हैं तो वह ठीक ही है। शबरी के साथ, "माता" रूप में सम्बन्ध होने के कारण भी उसके लिये भामिनी सम्बोधन सर्वथा उचित ही है।

भगवान से मिलने के पश्चात अपने जीवनक्रम की पूर्णता मानकर शबरी ने योगाग्नि प्रगट की। वह उस योगाग्नि में अपने आप समा गई। आध्यात्मिक जीवन जीनेवाली एक भीलनी की जीवनलीला समाप्त हो गई।

नवधा भक्ति

श्रीराम लक्ष्मण का शबरी की कुटिया में आगमन..... शबरी द्वारा चरण स्पर्श... अति सुंदर आसन ग्रहण करने के लिए विनती...... शबरी द्वारा राम लक्ष्मण को (मीठे) जूठे बेर खिलाना....... "मुझे स्तुति करना नहीं आता " ऐसा कहने पर श्रीराम उसके भक्तिभाव को दखकर नौ प्रकार की

भक्ति बताते हैं ...... वही है नवधा भक्ति।

भगवान श्रीराम शबरी से कहते हैं कि, हे शबरी! मैं किसी व्यक्ति की जात, पात, कुल, धर्म, बड़ाई, चतुराई नहीं देखता, मैं तो केवल भक्ति से नाता जोड़ता हूँ।

भगवान ने शबरी को नौ प्रकार की जो भक्ति कही वह बड़ी सरल, अति उत्तम एवं प्राणिमात्र को ईश्वर का साक्षात्कार कराये ऐसी है। व्यक्ति जब चाहे तब असे प्रारंभ कर सकता है, आचरण कर सकता है।

प्रथम प्रकार की भक्ति है सन्तों का संग जो, व्यक्तिजीवन में सात्विकता लाता है। व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक उन्नति हेतु किती संत से मार्गदर्शन लेना चाहिऐ।

प्रश्न यह है कि, संत किसे कहें? रामकृष्ण परमहंस ने कहा है कि जिसके पास जाने से शांति का अनुभव हो, वह 'संत'। ऐसे संत का संग यह प्रथम प्रकार की भक्ति है।

दुसरी भक्ति है 'मम कथा प्रसंग' अर्थात् राम कथा प्रसंग। परन्तु यहाँ पर शर्त है ऐसी कथा जहाँ रति हो। रति योन जो नित्य वृध्दिगंत हो ऐसी जिज्ञासा, ऐसी मनोभाव। कथाश्रवण नित्यरूप में बढ़े यह जरूरी है।

तीसरी भक्ति है गुरूचरण सेवा। जिसके कारण हमारे जीवन का अंधकार दूर हो और हमें प्रकाश प्राप्त हो। जिसने हमे सत्य मार्ग का दर्शन कराया हो ऐसे गुरू के चरण की सेवा। इसमें शर्त है अमान सेवा अर्थात् अभिमान का त्याग कर की हुई सेवा।

चौथी भक्ति है समूह में प्रभु के गुणगान करना परन्तु शर्त है कपट त्याग कर। रामकथा पारायण यह समूह में श्रीराम का गुणगान है। यदि कोई कथाकार धन प्राप्त करने के आशस से रामकथा कहता है, तो वह कपट है। रामकथा में आये श्रोतागण भक्तिभावपूर्णक स्वयं कथाकार के सन्मुख दक्षिणा रखते हैं तो एक अलग बात है परन्तु कथाकार का उद्देश विशुध्द होना चाहिए। जैसे रामकथा का आशय धनप्राप्ति के संदर्भ में है वैसे प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु रामकथा है, तो वह भी कपट है। रामकथा प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए नहीं है। किसी को अच्छा लगे इसलिये कथा नहीं है। किसी को रिझाने के लिए कथा नहीं है। रामकथा समूह में भक्ति है। कपट रहित रामकथा द्वारा प्रभु का समूहगान ही सच्ची भक्ति है।

पाँचवी भक्ति है मंत्रजाप, नामस्मरण। मंत्रजाप में अपना दृढ विश्वास होना चाहिए। बारंबार मंत्र बदलना भी उचित नहीं है। एक की मंत्र का निरन्तर, अविरत, निष्ठापूर्वक पाठ ही हमें गंतव्य तक ले जाता है। वेद से प्रकाशित मंत्र में शक्ति है, आवश्यकता है हमारे दृढ विश्वासपूर्वक जाप करने की।

छठवी भक्ति है 'बिरति बहु करमा'। हम बहुत कर्मो में प्रवृत्त हैं। धीरे - धीरे सभी कर्मो से निवृत्ति लेकर प्रभुस्मरण की ओर गति करना अर्थात् आध्यात्मिक जीवन का प्रारंभ करना यहि 'बिरति बहु करमा' है। कर्म से निवृत्त होते समय दमन के द्वारा निवृत्त होने की अपेक्षा न हो, अपितु शील के आधार पर विजय प्राप्त करना है।

काल, गुण, अवस्था, वर्ण, कामना, भाषा जैसे छ प्रकार की भक्ति है। जिसका क्रमशः संक्षिप्त उल्लेख निम्न परिच्छेद में करेंगे।

1) कालातीत भक्ति
2) गुणातीत भक्ति
3) वर्णातीत भक्ति
4) अवस्थातीत भक्ति
5) कामनातीत भक्ति
6) गिरातीत भक्ति

1) कालातीत भक्ति में कहीं भी दमन नहीं परन्तु शील द्वारा काल पर विजय प्राप्त की जाती है।

2) गुणातीत भक्ति का अर्थ है सत्व, रज और तम गुणों से परे रहना या ऊपर रहता।
3) अपने यहाँ समाज व्यवस्था गुणकर्म आधारित थी। उन वर्णों से परे रहकर भक्ति करना।
4) अवस्थातीत भक्ति में व्यक्ति जीवन की बाल, तरूण, वृध्द अवस्थाओं से परे रहना। अवस्था में एक अर्थ ऐसा है कि व्यक्ति की जागृत, सुप्त और सुषुप्त अवस्था है उससे परे रहना।
5) कामनातीत भक्ति में कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं होती। मुझे कुछ देना है ऐसी मन:स्थिती की अपेक्षा है।
6) गिरातीत भक्ति अर्थात् भाषा, वाणी से परे रहते हुए की गई भक्ति।

व्यक्ति किसी न किसी प्रवृत्ति में प्रवृत्त रहता है। कुछ मात्रा में यह आवश्यक भी है। परन्तु प्रवृत्ति से कभी तृप्ति नहीं होती। कभी न कभी मुझे निवृत्त होना ही है की मानसिकता से प्रवृत्त रहना है।

निवृत्ति अर्थात् वैराग्य, यह आध्यात्मिक स्थिती है। अति प्रवृत्ति से निवृत्ति यानी विरक्ति। यहाँ पर भगवान ने अति कर्मों से विरक्त होने को कहा है।

सातवी भक्ति है सन्तों को परमात्मा से बढ़कर मानना। जो सन्त समग्र जगत को समभाव से राममय मानते हैं ऐसे सन्तों को मानना ही भक्ति है।

आठवीं भक्ति है संतोष। हमें जो कुछ प्राप्त होता है उसमें संतोष होना चाहिए। स्वप्न में भी हम दुसरों के दोष न देखें और यदि कोई हमारे दोष बताता है तो उसका खुले मन से स्वीकार करें।

व्यक्तिगत जीवन में हमें पुरूषार्थ अवश्य करना है। पुरूषार्थ से जो प्राप्त होता है, उसमें संतोष रखना चाहिए। संतोष एक भक्ति है।

नवमी भक्ति है सरल जीवन। अपना जीवन छल-कपट विहीन होना चाहिए। हम परमात्मा को आधार मानकर जीवनयापन करते हैं और किसी भी अवस्था में हर्ष अथवा शोक न करें तो अपना जीवन सरल होगा। यह नवमी भक्ति है।

माता शबरी स्वयं भक्ति हैं। सजीव भक्ति हैं, वह भक्ति स्वरूपा हैं। भगवान कहते हैं, इन नौ भक्तियों में से एक भक्ति को आधार मानकार भी यदि कोई जीवनयापन करता है, इसमें से एक भक्ति मार्ग पर भी कोई चलता है तो ऐसा व्यक्ति मुझे अत्यंत प्रिय है।

हे शबरी! तुझ में तो ये सभी नौ भक्तियों के दर्शन हो रहे हैं। अतः योगी पुरूषों को जो दुर्लभ है ऐसी गति तुझे सुलभ होगी।

श्री रामचरितमानस में नवधा भगति

नवधा भगति कहऊँ तोहि पाही
सावधान सुनु धरू मन मांहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा
दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।
गुरू पद पंकज सेवा
तीसरी भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गान
कराइ कपट ताजि गान।
मंत्र जाप मम दृढ विश्वासा

पंचम भजन सो वेद प्रकासा।
छट दम सील विरति बहु करमा
निरत निरन्तर सज्जन धरमा।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा
मोहि ते संत अधिक करि लेखा।
आठवे जयालाभ संतोषा
सपनेहुँ नहि देखइ पर दोषा।
नवम सरल सब सन छलहीना
मम भरोसे हिये हरष न दीना।
नव महुँ एकइ जिन्ह के होई
नारि पुरूष सचराचर कोई॥

(गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में भक्ति की जगह पर 'भगति' शब्द का प्रयोग किया है)

एक लोककथा

रामायण में श्रीराम शबरी का मिलन बड़ा प्रसिध्द है। प्रतीक्षा कैसी? तो शबरी की प्रतीक्षा जैसी, ऐसा कोई भी कह सकता है। अनेक ग्रंथो में, पुस्तकों में प्रत्येक लेखक अपनी प्रतिभा के अनुसार इस कथा का वर्णन करते ही है। देश विदेश में होनेवाली छोटी बड़ी सभी रामकथाओं में इस प्रसंग का रसप्रद वर्णन प्रत्येक कथाकार करता ही है।

छोटे छोटे गाँवो में समय समय पर आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में भी इसका वर्णन बड़े भावपूर्ण ढंग से होता है। ऐसे ही प्रसंगों के आकार लेती है लोककथा। प्रत्येक लोककथा में उसका भाव, उससे प्राप्त होनेवाला बोध महत्त्व का है। ऐसे समय ऐतिहासिक आधार ढूँढना उचित नहीं, सम्भव भी नहीं। निम्न परिच्छेद में वर्णित लोककथा का आधार पूछने का या ढूँढने का कष्ट न करें यही विनती है।

वन में विचरण करते समय श्रीराम ने एक आश्रम देखा। उनके चरण उस ओर चल पड़े। वह आश्रम शबरी की कुटिया थी। अपनी कुटिया में प्रभु का आगमन होते ही शबरी ने चरण स्पर्श किये। चरण प्रक्षालन कर आसन ग्रहण करने को कहा। कई वर्षो से श्रीराम के आगमन की प्रतीक्षा करती शबरी रोजउसकी तैयारियाँ करती थी। शबरी ने बड़े प्रेम से भगवान को मीठे बेर खिलाये। इस भावूपर्ण प्रसंग का ऐसा वर्णन है कि शबरी माता ने चखकर बेर खिलाए। जूढे बेर श्रीरामने उड़े प्रेम से खाए। परन्तु यह सब देख लक्ष्मणजी को जूठे बेर खाने में संकोच हो रहा था। बड़ी कुशलता से एक एक बेर को मुख के पास ले जाकर वे उसे नीचे फेंक देते थे।

लक्ष्मणजी को ऐसा लगता था कि श्रीराम एवं शबरी का इस बात की ओर ध्यान नहीं है। त्रिकालग्य प्रभु श्रीराम को यह ज्ञान था, उन्होने संकेत भी किया।

दिन... मास... वर्ष... समय चला गया। पानी एवं पवन के प्रवाह से जमीन पर पड़े ये बेर गति करके द्रोण पर्वत तक पहुँचे। वहाँ वे अंकुरित हुए। एक अद्भुत वन्सपति का रूप धारण किया।

राम रावण युध्द में लक्ष्मणजी जब मुर्छित हुए तब हनुमानजी महाराज ने वैद्य के कहने पर संजीवनी प्राप्त करनते हेतु द्रोण पर्वत की ओर प्रमाण किया। उस समय संजीवनी वृक्ष के रूप में जिस वृक्षा का चयन हुआ वह अन्य कोई नहीं वही अद्भुत वनस्पति थी, जिसने लक्ष्मणजी की मूर्छा दूर की।

शबरी माता राम नाम का जप निरन्तर करती थी। बेर एकत्र करते समय भी राम राम का मंत्र चलता ही था। वे बेर उस पवित्र मंत्र से अभिमंत्रित थे। ऐसे बेर के बीज से संजीवनी वृक्ष अवतरित हुए थे।

एक दुसरा वर्णन ऐसा है कि जिस जिव्हा ने ये बेर चखे थे उसी जिव्हा ने राम नाम मंत्र रटण किया था। उसी जिव्हा का इन बेरों से स्पर्श हुआ था। राम नाम मंत्र जप में जो संजीवनी है, उसका प्रभाव इन बेरों पर था। उसके बीज से अंकुरित वनस्पती संजीवनी वृक्ष के रूप में लक्ष्मणजी के उपयोग में आई।

शबरी के जूठे बेर का महत्त्व समझाने वाली यह कथा सबका प्रबोधन करती है।

पम्मा सरोवर के मंतगतीर्थ का माहात्म्य

आजगाम ततः पम्पां लक्ष्मणेन सह प्रभुः।
स ददर्श ततः पुण्यामुदार जनसेविताम्॥
मतंग सरसं नाम हृदं समवगाहत।
अरविन्दोत्पलवतीं पद्म सौगंधिकायुताम्॥

लक्ष्मण सहित श्रीराम पम्पा तट पर आये और सरोवर की ओर देखने लगे। सरोवर के तट पर ऋषि मुनियों ने तपस्या की थी। पम्पा सरोवर में राम-लक्ष्मण ने यथाविधी स्नान किया।

पम्पा सरोवर के मतंग तीर्थ में स्नान करनेवाले प्रभु राम ने लक्ष्मणजी को इस तीर्थ का माहात्म्य बताते हुए कहा

सप्तानां च समुद्राणामेषु तीर्थेषु लक्ष्मण।
उपस्पृष्टं च विधिवत्पितरस्वापि तर्पिताः॥
प्रनष्टमशुभं तत्तत्कल्ल्याणं समुपस्थितम्।
तेन तत्त्वेन हृष्टं मे मनो लक्ष्मण संप्रति॥

पुष्करिणी नदी के इस रम्य सरोवर में मतंग ऋषि स्थापित सप्त समुद्र तथा अनेक तीर्थों के पवित्र जल में स्थान करके मैंने मार्जन तथा पितृपर्तण किया है। उसके कारण अपना सर्व अशुभ नष्ट होकर कल्याण होगा, इसी कारण संप्रति मेरे मन को अत्यन्त आनंद का अनुभव हो रहा है।

तीर्थयात्रा एक सज्जन धर्म

वेद, उपनिषद, भागवत्, गीता इत्यादि हमारे हिन्दू धर्म के पुरातन ग्रंथ है। व्यक्ति जीवन, समाज जीवन एवं राष्ट्रजीवन के समान सभी क्षेत्रों में ये ग्रंथ मार्गदर्शक हैं। व्यक्ति मात्र को प्रभुदर्शन की इच्छा होती है। ये सारे ग्रंथ इस संदर्भ में भी मार्गदर्शन करते हैं। व्यक्ति का सज्जन धर्म क्या है। इसकी जानकारी इन ग्रंथों में तो है ही परन्तु गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में भी सज्जन धर्म का वर्णन किया है।

ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन
जहं लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन।

इस वर्णन में व्यक्ति के विविध धर्मों का वर्णन है, उसमें एक है तीर्थयात्रा करना। स्थान स्थान

की तीर्थयात्रा कर भगवद् दर्शन करना।

व्यक्ति जब विविध तीर्थों में प्रभुदर्शन करता है, तो उस तीर्थ में पवित्र स्नान भी करता है। अपने यहाँ तीर्थस्नान का बड़ा महत्त्व है। तीर्थयात्रा एक धर्म है। तो तीर्थस्नान उसमें अंतर्निहित है।

शबरी धाम के समीप पूर्णा (पुष्करिणी) नदी के तट पर पम्पा सरोवर के मतंग तीर्थ का स्नान भी पवित्र माना गया है। पुरातन समय में इस पम्पा सरोवर के किनारे अनेक ऋषिमुनियों के आश्रम थे। श्रीराम, लक्ष्मण, ऋषि मतंग जैसे अनेको ने यहाँ पर स्नान किया। अनेक संत महात्माओं ने इस पम्पा सरोवर के पवित्र तीर्थ में स्नान किया है। आज भी हम सभी के लिए इस पवित्र स्नान का जीवन में बड़ा महत्त्व है। शबरीकुम्भ के समय लाखों श्रध्दावान व्यक्तियों को यह सुअवसर प्राप्त होगा।

समाज में पढे लिखे विद्वान व्यक्ति रामायण, गीता, भागवत जैसे ग्रंथों के अध्ययन द्वारा जीवन के लिए विविध प्रकार का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते है। सरल सहज जीवन जीनेवाले अपने वनवासी बन्धु और नगरों में रहकर मेहनत मजदूरी कर जीवनयापन करनेवाले अपने अनपढ बन्धुओं की लौकिक पढाई कम होती है। धर्म आधारित जीवन जीनेवाले ऐसे बन्धु, ये विचार कथा-पारायण में किसी संत महात्मा के पास से अथवा भजन-कीर्तन के माध्यम से प्राप्त करते हैं।

आइए! कुछ ऐसे ही विचारों का स्मरण करें।

अपने जीवन में आहार शुध्दि, व्यक्तिगत जीवन में व्यवहार शुध्दि, विचार शुध्दि, उच्चार शुध्दि अर्थात् वाणी शुध्दि इत्यादी का बड़ा महत्त्व है। इन मूल्यों का जिनके जीवन में दर्शन होता है ऐसे व्यक्ति धर्म आधारित जीवन जी रहे है, ऐसा कह सकते हैं। इन सभी को कुछ कष्ट उठाकर भी अपने क्षेत्र के समीप जो भी कोई तीर्थस्थल है, उसकी तीर्थयात्रा करनी चाहिए।

तीर्थयात्रा, तीर्थस्नान के लिए कुछ कष्ट अवश्य होंगे फिर भी यह एक सज्जन धर्म है, अतः उसका विचार करते हुए प्रयास करना चाहिऐ।

शबरीकुंभ के समय शबरी धाम की तीर्थयात्रा एवं पम्पा सरोवर के तीर्थ में पवित्र स्नान का संकल्प करें यही प्रार्थना हैं।

रामायण में पम्पा सरोवर का वर्णन

वाल्मीकि रामायण में पम्पा सरोवर का प्रथम उल्लेख अरण्यकांड के प्रारंभ में प्रभु राम और शरभंग मुनि की भेंट के समय आता है। शरभंग मुनि के ब्रह्मलोक प्रयाण के बाद आश्रम के ऋषि मुनि प्रभु रामजी से मिले और उन्होंने इस प्रकार निवेदन किया।

> एहि पश्य शरीराणि मुनीनां भावितात्मनाम्।
> हतांनां राक्षसैर्घोरैर्बहूनां बहुधा वने॥
> पम्मपानदी निवासानां मनुमंदाकिनीमपि।
> चित्रकूटलयानां च क्रियते कदनं महत्॥
> एवं वयं न मृष्यामो विप्रकारं तपस्चिनाम्।
> क्रियमाणं वने घोरं रक्षोभिर्भीमकर्मभि:॥

पम्पा सरोवर के तट पर तथा मंदाकिनी नदी के तट पर और चित्रकुट पर्वत पर राक्षसों ने ऋषियों को सताना तथा प्राणहरण करने का उपक्रम चलाया है, इसलिए प्रभु आप हमारा उनसे रक्षण करें।

एक स्थान पर कबन्ध राक्षस को गति देने के बाद शरभंगमुनि पुष्करिणी (पूर्णा) नदी के

पम्मा सरोवर का वर्णन निम्नानुसार करते हैं।

ततः मुष्करिणीं वीरौ पम्पा नाम गमिष्यथ।
अशर्करामविभ्रंशां समतीर्थामशैवलाम्॥
तत्र हंसाः प्लवाः क्रौंचा कराश्चैव राघव
वल्गुस्वराणि कूजन्ति पंपासलिलगोचराः।
नोद्विजन्ते नरन्दृष्टवा वधस्याकोविदाः पुरा॥

हे वीर! आगे आप पम्पा नाम पुष्कारिणी पर जायेंगे। हे प्रभु, उस पुष्करिणी मे गड्ढे नहीं हैं, शैवाल नहीं है इसलिए फिसलने की संभावना नहीं है, उदक (जल) शांत है। उसमें रेत है और विभिन्न प्रकार के कमलपुष्पों से वह सुशोभित है। वहां हंस, क्रौंच आदि मधुर ध्वनि करते हैं, उन्हें कोई मारता नहीं है इसलिए वह निर्भय है।

इस सुंदर पम्पा सरोवर का महत्त्व वाल्मीकि ने निम्नानुसार दिया है।

क्रमेव गत्वा प्रविलोकयन्वनं ददर्श पम्पांशुभदर्शकाननाम्
अनेक नानाविध पक्षीसंकुलां विवेश रामः सह लक्ष्मणेन॥

जिस पम्पा सरोवर के तट पर वन का अवलोकन क्रम से करते आते हुए उनको बहुत आनन्द आया, वह दर्शन भी शुभ था। उस पम्पा सरोवर में लक्ष्मण के साथ रामने स्नान के लिये प्रवेश किया।

शबरीकुम्भ

पृथिव्यां कुम्भयोगस्य चतुर्था भेद उच्यते।
गंगाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरि तटे॥

पृथ्वी पर चार स्थानों पर कुम्भमेला संपन्न होता है। वे स्थान हैं हरिद्वार (गंगाद्वार), प्रयाग, धारानगरी (उज्जैन), तथा गोदावरि तट पर नासिक - त्र्यम्बकेश्वर में। ये चार कुम्भस्थान प्रसिध्द और महत्वपूर्ण हैं। लेकिन कुम्भ मेले कुल मिलकार 12 हैं। अन्य कुम्भक्षेत्र के विषयमें शोध होना आवश्यक हैं।

देवानां द्वादशाहोभिरर्मत्यैद्वादश वत्सरेः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादश संख्यया॥

देवों के 72 दिवस अर्थात् मनुष्य के 12 साल में कुल बारह कुम्भ होते हैं। उसमें से चार प्रसिध्द कुम्भ ऊपर दिये हैं।

सिंह राशि में गुरू के भ्रमण के बाद कन्या राशि में गुरू जब भ्रमण करता है तब उस कालखण्ड में कृष्णा नदी के स्नान का महत्त्व 'धर्मसिन्धु' ग्रंथ में वर्णित है। अर्थात् एक कुम्भ कृष्णातट पर सम्पन्न होता होगा।

कुंभस्य कोणतो यस्मिन् सुधापूरं विनिस्सृतम्।
तस्मात् तत्पदं लोके कुम्भकोणम् वंदंतिहि॥

पुराणों के अनुसार अमृत था विश्वसृजन के बीजों से भरे हुए कुम्भ जलप्रलय के समय कुम्भकोणम में स्थिर हो गए।

भगवान शिवजी ने तीर से वह कुम्भ फोड़ दिया, उसके कारण कुम्भकोणम के महामाघम सरोवर में अमृत भर गया। आज भी महामाघम मुहूर्त के दिन सभी नदियां तथा तीर्थ कुम्भकोणम में

आते हैं ऐसी भाविकों की श्रध्दा है। वह जो मेला भरता है वह भी एक कुम्भ ही होगा ऐसा अभिप्राय 'कुम्भ महापर्व और अखाड़े' नामक पुस्तक में दिया है।

चित्रकूट पर्वत से पंचवटी पहुंचे प्रभु राम को सिंहस्थ पर्वकाल में कुशावर्ततीर्थ (त्र्यम्बकेश्वर) जाने के लिए कश्यप ऋषि ने कहा था। वहां रामजी ने महाराज दशरथजी का श्राध्द कराया था। ऐसी कथा रामायण में वर्णित है। इसका अर्थ है कन्यागत में सीताजी का अपहरण होकर प्रभु राम मतंग आश्रम में पहुंचे होंगे। किष्किंधा कांड के प्रारंभ मे वसंत ऋतु का वर्णन है, पुष्करिणी (पूर्णा नदि) के पम्मा सरोवर में स्नान का वर्णन है। आगे चलकर सुग्रीव भेंट, वालीवध, सुग्रीव राज्याभिषेक के बाद पम्पा तट का वर्णन, वर्षा तथा शरद ऋतु का वर्णन है। उसका अर्थ कन्यागत के बाद तुला राशि में जग गुरू का भ्रमण होता है उसी समय प्रभु राम ने पम्पा सरोवर में स्नान करके रावण पर आक्रमण के लिए प्रस्थान किया। उसके कारण तुला राशि में जब गुरू का भ्रमण है तब से वहाँ के स्नान का महत्व समाज में बसा हुआ है।

सभी कुम्भमेलों का समान सूत्र है कि उसके प्रमुख तीर्थ में सभी नदियां तथा सरोवरों का पानी उसी समय आता है ऐसी वहां के श्रध्दावान लोगों की भावना है। उसी प्रकार पम्पा सरोवर के 'मतंग तीर्थ' में ऋषियों ने सप्तसागर तथा उनके तीर्थों का जल आवाहित किया है। शबरीकुम्भ के कालवधि में भाविकोंको पम्पा सरोवर में स्नान करके कुंभ्म स्नान का फल मिलेगा तथा पवित्र पम्मा सरोवर एवं शबरीधाम का अवलोकन करने से पुण्य प्राप्त होकर प्रभु राज-लक्ष्मण-शबरी के दर्शन का लाभ मिलेगा। उसी के साथ मतंग ऋषि की तपोभूमि में निवास के अवसर के कारण अपनी साधना को भी गति मिलेगी। 'शबरीधाम यात्रा' का यही उत्तम योग है।

ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

चलो शबरी कुम्भ में
शबरी कुम्भ में, चलो शबरी कुम्भ में,
धर्म जागरण करें, शबरी कुम्भ में
चलो शबरी कुम्भ में॥ धृ॥
स्वाभिमान सूर्य उगा शबरी कुम्भ में
जागरण का शंखनाद शबरी कुम्भ में,
साधु संत आज चले शबरी कुम्भ में
चले शबरी कुम्भ में
ग्राम नगर साथ चले शबरी कुम्भ में
चले शबरी कुम्भ में
कोई न छोड़े स्वधर्म आज हमारा
गर्व से कह दो सभी हृ हिन्दू हमारा
जन मन हो आन्दोलित शबरी कुम्भ में
चले शबरी कुम्भ में
शक्तिरूप दर्शन हो शबरी कुम्भ में
चले शबरी कुम्भ में
वनवासी नगरवासी कुम्भ में चले
एक सूर एक हृदय एक रस बने
भारत साकार करें शबरी कुम्भ में
चले शबरी कुम्भ में
आज इतिहास रचे शबरी कुम्भ में
चले शबरी कुम्भ में

चतु:सप्ततितम :सर्ग:

श्रीराम और लक्ष्मण का पम्पा सरोवर के तट पर मतग्ङवन को देखना, शबरी का अपने का अपने शरीर की आहुति दे दिव्यधाम को प्रस्थान करना

तौ कबन्धेनं तं मार्गं पम्मया दर्शितं वने।
आतस्थतुर्दिशं गृह्य प्रतीचीं नृवरात्मजौ॥1॥

तदनन्तर राजकुमार श्रीराम और लक्ष्मण कबन्ध के बताये हुए पम्पा सरोवर के मार्ग का आश्रय ले प18चिम दिशा की ओर चल दिये॥1॥

तौ शैलेष्वाचितानेकान् क्षौद्रपुष्पफलद्रुमान्।
वीक्षन्तौ जग्मतुर्द्रष्टुं सुग्रीवं रामलक्ष्मणौ॥2॥

दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण पर्वतों पर फैले हुए बहुत-से वृक्षों को, जो फूल, फल और मधु से सम्पन्न थे, देखते हुए सुग्रीव से मिलने के लिए आगे बढ़े॥2॥

कृत्वा तु शैलपृष्ठे तु तौ वासं रघुनन्दनौ।
पम्पाया: प18चिमं तीरं राघवावुपतस्थतु:॥3॥

रात में एक पर्वत-शिखर पर निवास करके रघुकुल का आनन्द बढ़ानेवाले वे दोनों रघुवंशी

बन्धु पम्पा सरोवर के प18चिम तट पर जा पहुँचे॥3॥

तौ पुष्करिण्या: पम्पायास्तीरमासाद्य प18चिमम्।
अपश्यतां ततस्तत्र शबर्या रम्यमाश्रमम्॥4॥

पम्पा नामक पुष्करिणी के प18चिम तट पर पहुँचकर उन दोनों भाइयों ने वहाँ शबरी का रमणीय आश्रम देखा॥4॥

तौ तमाश्रममासाद्य द्रुमैर्बहुभिरावृतम्।
सुरम्यमभिवीक्षन्तौ शबरीमभ्युपेयतु:॥5॥

उसकी शोभा निहारते हुए वे दोनों भाई बहुसंख्यक वृक्षों से घिरे हुए उस सुरम्य आश्रम पर जाकर शबरी से मिले॥5॥

तौ दृष्ट्वा तु तदा सिध्दा समुत्थाय कृताञ्जलि:।
पादौ जग्राह रामस्य लक्ष्मणस्य च धीमत:॥6॥

शबरी सिध्द तपस्विनी थी। उन दोनों भाइयों को आश्रम पर आया देख वह हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी तथा उसने बुध्दिमान् श्रीराम और लक्ष्मण के चरणो में प्रणाम किया॥6॥

पाद्यमाचमनीयं च सर्वं प्रादाद् यथाविधि।
तामुवाच ततो राम: श्रमणीं धर्म संस्थिताम्॥7॥

फिर पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय आदि सब सामग्री समर्पित की और विधिवत् उनका सत्कार किया। तत्प_चात् श्रीरामचन्द्रजी उस धर्मपरायणा तपस्विनीसे बोले -॥7॥

कच्चित्ते निर्जिता विघ्ना: कच्चित्ते वर्धते तप:।
कच्चिते नियत: कोप आहार_च तपोधने॥8॥

तपोधने! क्या तुमने सारे विघ्नो पर विजय पा ली? क्या तुम्हारी तपस्या बढ़ रही है? क्या तुमने क्रोध और आहार को काबू में कर लिया है?॥8॥

कच्चित्ते नियमा: प्राप्ता: कच्चित्ते मनस: सुखम्।
कच्चिते गुरूशुश्रूषा सफला चारूभाषिणि॥9॥

'तुमने जिन नियमों को स्वीकार किया है, वे निभ तो जाते हैं न? तुम्हारे मनमें सुख और शान्ति है न? चारूभाषिणि! तुमने जो गुरूजनों की सेवा की है, वह पूर्णरूप से सफल हो गयी है न?'॥9॥

रामेण तापसी पृष्टा सा सिध्दा सिध्दसम्मता।
शशंस शबरी वृध्दा रामाय प्रत्यवस्थिता॥10॥

श्रीरामचन्द्रजी के इस प्रकार पूछने पर वह सिध्द तपस्विनी बूढी शबरी, जो सिध्दों के द्वारा सम्मानित थी, उनके सामने खड़ी होकर बोली -॥10॥

अद्य प्राप्ता तप: सिध्दिस्तव संदर्शनान्मया।
अद्य मे सफलं जन्म गुरवच्छ सुपूजिता:॥11॥

'रघुनन्दन! आज आपका दर्शन मिलने से ही मुझे अपनी तपस्या में सिध्दि प्राप्त हुई है। आज मेरा जन्म सफल हुआ और गुरूजनों की उत्तम पूजा भी सार्थक हो गई॥11॥

अद्य में सफलं तप्तं स्वर्गश्चैव भविष्यति।
त्वयि देववरे राम पूजिते पुरूषर्षभ॥12॥

'पुरूषप्रवर श्रीराम! आप देवेश्वरका यहाँ सत्कार हुआ; इससे मेरी तपस्या सफल हो गई और

अब मुझे आपके दिव्य धामकी प्रासि भी होगी ही॥ 12॥

तवाहं चक्षुषा सौम्य पूता सौम्येन मानद।

गमिष्याम्यक्षयांल्लोकांस्त्वत्प्रसादादरिंदम॥13॥

'सौम्य! मानद! आपकी सौम्य दृष्टि पड़ने से मैं परम पवित्र हो गई। शत्रुदमन! आपके प्रसाद से ही अब मैं अक्षय लोको में जाऊँगी॥13॥

चित्रकूटं त्वयि प्राप्त विमानैरतुलप्रभैः।

इतस्ते दिवमारूढा यानहं पर्यचारिषम्॥14॥

'जब आप चित्रकूट पर्वत पर पधारे थे, उसी समय मेरे गुरूजन, जिनकी मैं सदा सेवा किया करती थी, अतुल कान्तिमान् विमान पर बैठकर यहाँ से दिव्यलोक को चले गये॥

तैच्छाहमुक्ता धर्मज्ञैर्महाभागैर्महर्षिभिः।

आगमिष्यति ते रामः सुपुण्यमिममाश्रमम्॥15॥

स ते प्रतिग्रहीतव्यः सौमित्रिसहितोऽतिथिः।

तं च दृष्ट्वा वरांल्लोकानक्षयांस्त्वं गमिष्यसि॥16॥

'उन धर्मज्ञ महाभाग महर्षियों ने जाते समय मुझसे कहा था कि तेरे इस परम पवित्र आश्रम पर श्रीरामचन्द्रजी पधारेंगे और लक्ष्मण के साथ तेरे अतिथि होंगे। तुम उनका यथावत् सत्कार करना। उनका दर्शन करके तू श्रेष्ठ एवं अक्षय लोकों में जायगी॥15-16॥

एवमुक्ता महाभागैस्तदाहं पुरूषर्षभ।

मया तु संचितं वन्यं विविधं पुरूषर्षभ॥17॥

तवार्थे पुरूषव्याघ्र पम्पायास्तीरसम्भवम्।

'पुरूषप्रवर! उन महाभाग महात्माओंने मुझसे उस समय ऐसी बात कही थी। अतः पुरूष सिंह! मैंने आपके लिए पम्पा तट पर उत्पन्न होनेवाले नाना प्रकार के जंगली फल-मूलों का संचय किया है॥17.5॥

एवमुक्तः स धर्मात्मा शबर्या शबरीमिदम्॥18॥

राघवः प्राह विज्ञाने तां नित्यमबहिष्कृताम्।

शबरी (जातिसे वर्णबाह्य होने पर भी) विज्ञान में बहिष्कृत नहीं थी - उसे परमान्मा के तत्त्व का नित्य ज्ञान प्राप्त था। उसकी पूर्वोक्त बातें सुनकर धर्मात्मा श्रीरामने उससे कहा-॥18.5॥

दनोः सकाशात् तत्त्वेन प्रभावं ते महात्मनाम्॥19॥

श्रुतं प्रत्यक्षमिच्छामि संद्रष्टुं यदि मन्यसे।

'तपोधने! मैंने कबन्धके मुखसे तुम्हारे महात्मा गुरूजनों का यथार्थ प्रभाव सुना है। यदि तुम स्वीकार करो तो मैं उनके उस प्रभाव को प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ॥19॥

एतत्तु वचनं श्रुत्वा रामवक्त्रविनिः सृतम्॥20॥

शबरी दर्शयामास तावुभौ तद्वनं महत्।

श्रीराम के मुखसे निकले हुए इस वचन को सुनकर शबरी ने उन दोनों भाइयों को उस महान् वनका दर्शन कराते हुए कहा -॥20.5॥

पश्य मेघघनप्रख्यं मृगपक्षिसमाकुलम्॥21॥

मतग्ङवनमित्येव विश्रुतं रघुनन्दन।

'रघुनन्दन! मेघों की घटा के समान श्याम और नाना प्रकार के पशु-पक्षियों से भरे हुए इस

वनकी ओर दृष्टिपात कीजिये। यह मतंगवन के नाम से ही विख्यात है॥21.5॥

इह ते भावितात्मानो गुरवो मे महाद्युते।
जुहवांचक्रिरे नीडं मन्त्रवन्मन्त्रपूजितम्॥22॥

'महातेजस्वी श्रीराम! यहीं वे मेरे भावितात्मा (शुध्द अन्तः करणवाले एवं परमान्मचिन्तनपरायण) गुरूजन निवास करते थे। इसी स्थान पर उन्होंने गायत्री मन्त्र के जप से विशुध्द हुए अपने देहरूप पञ्जर को मन्त्रोच्चारणपूर्वक अग्निमें होम दिया था॥22॥

इयं प्रत्यक्स्थली वेदी यत्र ते मे सुसत्कृताः।
पुष्पोपहारं कुर्वन्ति श्रमादुद्वेपिभिः करैः॥23॥

'यह प्रत्यक्स्थली नामवाली वेदी है, जहाँ मेरे द्वारा भलीभाँति पूजित हुए वे महर्षि वृध्दावस्था के कारण श्रम से काँपते हुए हाथों द्वारा देवताओंको फूलों की बलि चढ़ाया करते थे॥23॥

तेषां तपःप्रभावेण पश्याद्यापि रघूत्तम।
द्योतयन्ती दिशः सर्वाः श्रिया वेद्यतुलप्रभा॥24॥

'रघुवंशशिरोमणे! देखिये, उनकी तपस्या के प्रभाव से आज भी यह वेदी अपने तेज के द्वारा सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाशित कर रही है। इस समय भी प्रभा अतुलनीय है॥24॥

अशक्रुवद्भिस्तैर्गन्तुमुपवासश्रमालसैः।
चिन्तितेनागतान् पश्य समेतान् सप्त सागरान्॥25॥

'उपवास करने से दुर्बल होने के कारण जब वे चलने-फिरने में असमर्थ हो गये, तब उनके चिन्तामात्र से वहाँ सात समुद्रों का जल प्रकट हो गया। वह सप्तसागर तीर्थ आज भी मौजूद है। उसमें सातों समुद्रों के जल मिले हुए हैं, उसे चलकर देखिये॥25॥

कृताभिषेकैस्तैर्न्यस्ता वल्कलाः पादपेष्विह।
अद्यापि न विशुष्यन्ति प्रदेशे रघुनन्दन॥ 26॥

'रघुनन्दन! उसमें स्नान करके उन्होंने वृक्षों पर जो वल्कल वस्त्र फैला दिये थे, वे इस प्रदेश में अब तक सूखे नहीं हैं॥26॥

देवकार्याणि कुर्वभ्दिर्यानीमानि कृतानि वै।
पुष्पैः कुवलयैः सार्धं म्लानत्वं न तु यान्ति वै॥27॥

'देवताओं की पूजा करते हुए मेरे गुरूजनों ने कमलों के साथ अन्य फूलों की जो मालाएँ बनाई थी, वे आज भी मुरझायी नहीं है॥27॥

कृत्स्नं वनमिदं दृष्टं श्रोतव्यं च श्रुतं त्वया।
तदिच्छाम्यभ्यनुज्ञाता त्यक्ष्याम्येतत् कलेवरम्॥28॥

'भगवन्! आपने सारा वन देख लिया और यहाँ के सम्बन्ध में जो बातें सुनने योग्य थी, वे भी सुन ली। अब मैं आपकी आज्ञा लेकर इस देह का परित्याग करना चाहती हूँ॥28॥

तेषामिच्छाम्यहं गन्तुं समीपं भावितात्मनाम्।
मुनीनामश्रमो येषामहं च परिचारिणी॥29॥

'जिनका यह आश्रम है और जिनके चरणों की मैं दासी हूँ, उन्हीं पवित्रात्मा महर्षियों के समीप अब मैं जाना चाहती हूँ॥29॥

धर्मिष्ठं तु वचः श्रुत्वा राघवः सहलक्ष्मणः।
प्रहर्षमतुलं लेभे आ_चर्यमिति चाब्रवीत्॥30॥

शबरी के धर्मयुक्त वचन सुनकर लक्ष्मण सहित श्रीराम को अनुपम प्रसन्नता प्राप्त हुई। उनके मुँहसे निकल पड़ा, 'आच्छर्य है!'॥30॥

तामुवाच ततो रामः शबरीं संशितव्रताम्।

अर्चितोऽहं त्वया भद्रे गच्छ कामं यथासुखम्॥31॥

तदनन्तर श्रीराम ने कठोर व्रतका पालन करनेवाली शबरी से कहा - 'भद्रे! तुमने मेरा बड़ा सत्कार किया। अब तुम अपनी इच्छा के अनुसार आनन्दपूर्वक अभीष्ट लोक की यात्रा करो॥

इत्येवमुक्ता जटिला चीरकृष्णाजिनाम्बरा।

अनुज्ञाता तु रामेण हुत्वाऽऽत्मानं हुताशने॥32॥

ज्वलत्पावकसंकाशा स्वर्गमेव जगाम ह।

दिव्याभरणसंयुक्ता दिव्यमाल्ल्यानुलेपना॥33॥

दिव्याम्बरधरा तत्र बभूव प्रियदर्शना।

विराजयन्ती तं देशं विद्युत्सौदामनी यथा॥34॥

श्रीरामचन्द्रजी के इस प्रकार आज्ञा देने पर मस्तक पर जटा और शरीर पर चीर एवं काला मृगचर्म धारण करनेवाली शबरी ने स्वयं को आग में होमकर प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी शरीर प्राप्त किया। वह दिव्य वस्त्र, दिव्य आभूषण, दिव्य फूलों की माला और दिव्य अनुलेपन धारण किए बड़ी मनोहर दियाई देने लगी तथा सुदाम पर्वत पर प्रकट होनेवाली बिजली के समान उस प्रदेश को प्रकाशित करती हुई स्वर्ग (साकेत) लोक को ही चली गई॥32-34॥

यत्र ते सुकृतात्मानो विहरन्ति महर्षयः।

तत् पुण्यं शबरी स्थानं जगामात्मसमाधिना॥35॥

उसने अपने चित्त को एकाग्र करके उस पुण्यधामकी यात्र की, जहाँ उसके वे गुरूजन पुण्यात्मा महर्षि विहार करते थे॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्येऽरण्यकाण्डे चतुः सप्ततितमः सर्गः॥74॥

इस प्रकार श्रीवाल्मीकि निर्मित आर्षरामायण आदि काव्य के अरण्यकाण्ड में चौहत्तरवाँ सर्ग पूरा हुआ॥74॥

आरती

जय शबरी माता ......मा जय शबरी माता
दण्डकारण्ये वसता) 2)
सुबीरधाम सोह्यां, मा जय शबरी माता..........॥धृु॥
पम्पा सरोवर कांठे, मातंग ऋषि शिष्या .....मा ...मातंग....
तपस्या फळी तमारी) 2) प्रभु रामने पाम्या
.... मा जय शबरी माता॥1॥
लक्ष्मणने अति व्हालां, रामने अति व्हालां ...... मा रामने......
ऐठां बोर ते तारा) 2) प्रेम भरी खाता
..... मा जय शबरी माता॥2॥
नवधा भक्तिनो मर्म प्रभु तुजने कहेता .....प्रभु....
प्रेम लक्षणा भक्ति) 2) सौथी न्यारी गणता
.... मा जय शबरी माता॥3॥
भाव धरी मा तारी आरती अम करता ......मा आरती....
बेठकर जोडी नमीऐ) 2) सौनु शुभ करवा
..... मा जय शबरी माता॥4॥
आरती तारी प्रेमथी जे कोई गाशे ....मा जे कोई.....
सुमित्रानंदन साथे) 2) रामकृषा थाशे
...... मा जय शबरी माता॥5॥
जय शबरी माता) ....पूर्ण धृु(...

(शबरी धाम में नित्य हो रही यह आरती गुजराती भाषा में है)

आभार........

सन 2002 में शबरी धाम, गाँव : सुबीर, (जि. डांग-गुजरात) में प्रसिध्द रामकथाकार पू. मोरारिबापू ने रामकथा पारायण किया था। प्रतिदिन शबरी का जीवन श्रोताओं के समक्ष रखा। सारी रामकथा मानों मानस शबरी कथा बन गई।

पश्चात शबरी के जीवन पर आधारित एक छोटीसी पुस्तिका लिखने का विचार हुआ। इस पुस्तिका का आधार पू. मोरारिबापू की रामकथा है, यह कहते हुए मैं गौरव अनुभव करता हूँ। उनके प्रति आभार प्रगट करते हुए चरण वंदन करता हूँ।

जिनकी प्रेरणा से मुझे यह पुस्तिका के लेखन कार्य की प्रेरणा मिली, ऐसे रा.स्व. संघ के प्रचारक श्री शरदराव ढोलेजी का अन्त:करणपूर्वक में ऋण स्विकार करता हँ।

विश्व संवाद केन्द्र (कर्णावती) के सम्पादक महोदय श्री कृष्णपालसिंह भदौरिया, विद्याभारती की कार्यकर्ती श्रीमती इन्दुमति काटदरे एवं महाराज सयाजीराव विश्व विद्यालय - बडौदा, हिन्दी विभाग के निवृत्त प्राध्यापक आदारणीय श्री बंसीधरजी शर्मा का सम्पादन कार्य में बहुत सहयोग रहा। मैं उनका भी आभारी हूँ।

गुजरात के प्रसिध्द साहित्यकार श्री गुणवंत शाह के 'रामायण - मानवतानुं महाकाव्य' इस पुस्तक से भी कुछ विचार प्राप्त हुए, जिनको सम्मिलित करने का प्रयास किया है। मैं श्री गुणवंत शाह के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशक, जिनके प्रयासों के कारण यह पुस्तक समय पर आप तक पहुंचना सम्भव हो सका, का में आभारी हुँ।

मुख्यपृष्ठ की सजावट, अक्षर संयोजन, एवं मुद्रण कार्य में साधना मुद्रणालय ट्रस्ट से सहयोग प्राप्त हुआ। मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

भवदीय

राजेश दीक्षित